ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र   अगस्त 2017 (प्रथम)

हमारा भारत

हमारा गर्व

स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org

सत्संग का आनन्द उठाते हुए भक्तगण।

मुख्य वक्ता डा. राजेन्द्र विद्यालंकार

मुख्यवक्ता को सम्मानित करते हुए सभा अधिकारी।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 13 अंक 13

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

अगस्त, 2017 (प्रथम)
1 से 15 अगस्त, 2017 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय—श्रावणी और स्वाध्याय 2
2. किधर चल पड़े? 3
3. वेद में ईश्वर का स्वरूप 4
4. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी 6
5. मनुष्य अपने भाग्य का विधाता स्वयं है 7
6. झूठ का खुलासा 8
7. कूटनीतिज्ञ महाराजा सूरजमल 10
8. गायत्री मन्त्र-गुरुमन्त्र-गुरु परमात्मा है 11
9. श्री चन्द्रशेखर आजाद—जिनके सिंह पराक्रम से ही कांपती थी अंग्रेज सरकार 12
10. समाचार-प्रभाग 15

● ● ●

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

श्रावणी और स्वाध्याय

❑ उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

श्रावणी आर्यों के प्रसिद्ध पर्वों में से एक महान् पर्व है। यह वैदिक पर्व है। इसका सीधा सम्बन्ध वेद के अध्यापन और अध्ययन करने वालों से है। श्रावणी का पर्व वेद के स्वाध्याय का मुख्य पर्व प्राचीन काल से माना जाता है। इसका पूरा नाम श्रावणी उपाकर्म (ऋषि तर्पण) है। संभव है वेद के श्रवण करने से ही यह नाम रखा गया हो किन्तु श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को यह पर्व होता है अतः यह श्रावणी पर्व है। इसी श्रावणी पूर्णिमा के आधार पर ही इस मास का नाम भी श्रावण मास है। चारों वर्णों में प्रथम वर्ण (ब्राह्मण) का वेद का अध्ययन-अध्यापन करना मुख्य माना गया है। 'ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः' इस निरुक्त वचन से यही स्पष्ट होता है। मन्त्रार्थ दर्शन के कारण ही ऋषि का नाम प्रसिद्ध हुआ। इस पावन पर्व पर वेद का स्वाध्याय प्रारम्भ करने से इसका नाम ऋषि तर्पण प्रसिद्ध हुआ। जिस वस्तु से जिसकी तृप्ति (तर्पण) होती है उसी से उसका नाम पड़ता है। क्योंकि इस पर्व से वेद का स्वाध्याय प्रारम्भ होता है अतः ऋषि तर्पण नाम इस पर्व का प्रसिद्ध हो गया। इसी पर्व पर स्वाध्याय से ऋषियों का तर्पण किया जाता है अर्थात् विप्र ब्राह्मण आदि श्रावणी पूर्णिमा से प्रारम्भ करके साढ़े चार मास तक वेदाध्ययन करें। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में ग्रीष्म अवकाश के बाद विद्यालयों का प्रारम्भ श्रावणी से ही होता था। इस समय वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो जाती है। ऋषि महर्षि अपने आश्रमों से पहाड़ों व कंदराओं को छोड़कर गांवों व शहरों में आ जाते थे। गृहस्थियों के घरों में जा-जाकर वेदप्रचार करते थे। इस समय राजा-महाराजा भी अपने विजय अभियान को छोड़कर विश्राम करते थे क्योंकि सभी रास्ते पानी से भरे होते थे।

इस पर्व पर वेद के स्वाध्याय का बड़ा महत्त्व है। स्वाध्याय में प्रमाद का हमारे शास्त्रों में निषेध है। इसलिए कहा गया है कि स्वाध्याय का ज्ञान के परिवर्धन में बहुत महत्त्व है। शतपथ ब्राह्मण में स्वाध्याय की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि स्वाध्याय करने वाला सुख की नींद सोता है। उसमें इन्द्रियों का संयम और एकाग्रता आती है और प्रज्ञा (बुद्धि) की अभिवृद्धि होती है। स्वाध्याय की उपयोगिता असाधारण एवं अद्भुत है। यह मानसिक आरोग्य एवं वैचारिक संवर्धन के लिए आवश्यक है, क्योंकि मन और विचार के शुद्ध परिष्कृत हुए बिना स्वस्थ शरीर एवं शालीन व्यवहार की कल्पना नहीं की जा सकती। स्वाध्याय के द्वारा पहले मन स्वस्थ होता है, फिर जीवन। सोच-विचारकर तन्त्र में विकृति बनी रहने पर शारीरिक एवं व्यावहारिक परेशानियां तथा समस्याएं बनी रहती हैं। स्वाध्याय ही सबको ठीक करने के लिए सर्वप्रथम विचार तन्त्र को परिष्कृत एवं परिमार्जित करता है और अपने स्व और अस्तित्व का बोध कराता है। अतः आध्यात्मिक जगत् में इसे चिकित्सा का स्थान दिया गया है। इसलिए वेद स्वाध्याय का अत्यधिक महत्त्व है। जो वेद के स्वाध्याय को छोड़कर अन्य कर्मों में लगा रहता है वह परिवार सहित शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त व आचारहीन हो जाता है या आलस्य करता है अथवा दूषित अन्न खाता है ऐसा ब्राह्मण वर्ण आश्रम के धर्म से पतित माना जाता है। प्रसिद्ध ग्रन्थ योगदर्शन के नियमों में तो शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान कहकर स्वाध्याय को भी क्रियायोग बतलाया है। उपनिषदों में 'स्वाध्यायः परं तपः' कहा गया है। इस प्रकार जब विद्यार्थी गुरुकुल से विद्या पढ़कर समाज में जाना चाहता है तो उस समय समावर्तन संस्कार के अवसर पर आचार्य उपदेश देते हुए कहता है—'स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमादितव्यम्'। अर्थात् हे युवक सांसारिक जीवन में भी स्वाध्याय और प्रवचन करने में भी आलस्य नहीं करना। इस प्रकार स्वाध्याय का अति महत्त्व है।

प्राचीन काल में भी इस देश का प्रत्येक मनुष्य स्वाध्याय में लीन रहते थे। इस कारण वह ज्ञान-विज्ञान कला-कौशल के क्षेत्र में निपुण था। इस प्रकार सभी वर्णों में विद्या की प्राप्ति होती थी। स्वाध्याय करने से ही चार प्रकार से विद्या की प्राप्ति भलीभांति होती थी। आगम काल (गुरुमुख से पढ़ना) स्वाध्याय काल, प्रवचन काल और व्यवहार काल में प्रयोग करने से मनुष्य को विद्वान् बनने के लिए वेद आदि शास्त्रों को ही पढ़ना चाहिए। मनुस्मृति के अनुसार वेद को ही परम शास्त्र माना है। चारों आश्रमों में धर्म के पालन के लिए स्वाध्याय जरूरी है। मनुष्य चाहे तो सब कार्य छोड़ दे किन्तु स्वाध्याय को न छोड़े। श्रावणी के साथ नए यज्ञोपवीत को धारण करने और पुराने को छोड़ने की प्रथा जुड़ी हुई है। प्रत्येक उत्तम यज्ञ आदि कर्मों के समय नया यज्ञोपवीत धारण किया जाये क्योंकि विभिन्न कर्मों के समय विभिन्न प्रकार से यज्ञोपवीत धारण करने का विधान है। इसी आधार से श्रावणी पर्व पर यज्ञोपवीत बदलने की प्रथा है। यज्ञोपीवत का आर्यों के संस्कार और कर्मकांड में बड़ा महत्त्व है। यज्ञोपवीत के तीन धागे गले में पड़ते हैं वे पितृऋण, देवऋण और ऋषिऋण आदि कर्त्तव्यों से अपने को बंधा हुआ समझ लेते हैं। यह उपनयन यज्ञोपवीत व्रतबन्ध आदि पद इस संबंध में विशेष महत्त्व के हैं। परन्तु विडम्बना यह है कि वर्तमान समय में स्वाध्याय की प्रवृत्ति घटी है। यहां तक कि अध्ययन के प्रति सम्मान में भी कमी आई है। अध्ययन और पढ़ने में अन्तर और भेद होता है। इन दोनों में स्वाध्याय का स्थान ऊँचा और श्रेष्ठ है। अखबार और पत्र-पत्रिकाओं का उलटना-पलटना पढ़ने की कोटि में आता है। पढ़ना एक प्रकार से सूचना संग्रह करने की प्रक्रिया है। अध्ययन के अन्तर्गत श्रेष्ठ साहित्य, वेद, दर्शन, उपनिषद् और विज्ञान आदि आते हैं जिसमें विषय की गहराई होती है। अध्ययन में मनन-चिंतन का पर्याप्त स्थान होता है, क्योंकि इसके बिना विषय की गहराई में उतर पाना संभव नहीं है। स्वाध्याय में ऐसे साहित्य आते हैं जो हमारे अस्तित्व को जताने बताने के लिए सहायक सहयोगी होते हैं। साहित्य की प्रेरणा से जाने कितने लोगों ने अपने जीवन की धारा को बदल दिया। श्रेष्ठ साहित्य के गर्भ में महापुरुषों का निर्माण होता है। सज्जन और संवेदनशील व्यक्तियों का गठन होता है तथा यह समाज को सभ्य और सुसंस्कृत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार ऐसे सभ्य समाज में सत्साहित्य और महापुरुषों का समुचित सम्मान होता है। अतः श्रावणी पर्व पर प्रत्येक आर्य को स्वाध्याय का संकल्प लेना चाहिए।

किधर चल पड़े?

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

परमात्मा ने मनुष्यों को वेदज्ञान प्राणिमात्र के कल्याणार्थ दिया। इसी के आधार पर ऋषियों ने सत्य शास्त्रों की रचना की व उस रास्ते को प्रकाशित किया जिस पर चलकर मनुष्य का कल्याण हो सकता है। यहां इतना ध्यान अवश्य रहे कि मनुष्य की रचना इस प्रकार हुई है कि उसे स्वयं का हितसाधन करते हुए अन्य का भी हित साधन करना है। उसके साथ 'धर्म' जुड़ा है। ऋण जुड़े हैं, आश्रितों की सेवारूपी यज्ञ जुड़ा है, उसे किस रास्ते चलना है, इससे जुड़े कुछ निर्देशों का अवलोकन करते हैं। वेद का एक संदेश देखिए—

'श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तऋते श्रिता ॥'

अथर्ववेद के इस मन्त्र का भाष्य ऋषि जी ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में इस प्रकार किया है—"क्योंकि ईश्वर ने जो परम प्रयत्न करना, और जो धर्म का आचरण करना है, इसी धर्म से युक्त मनुष्यों को रचा है, इस कारण से ब्रह्म जो वेदविद्या और परमेश्वर के ज्ञान से युक्त होके सब मनुष्य अपने-अपने ज्ञान को बढ़ावें। सब मनुष्य ऋत जो ब्रह्म, सत्यविद्या और धर्माचरण इत्यादि शुभगुणों का सेवन करें।"

'कठोपनिषद्' का वह प्रसिद्ध संदेश तो हम जानते ही हैं—**'तयोः श्रेय आददानस्य साधु भवति।'**

प्रेय और श्रेय में से श्रेय मार्ग को ग्रहण करने वाले का भला होता है। मन और इन्द्रियों को खींचने वाली कामनाओं का त्याग कर आत्मा, परमात्मा, प्राण, मन, इन्द्रियों के रहस्य को जानने के लिए पुरुषार्थ करना, श्रेय मार्ग पर चलना है। आम जनता में भी प्रसिद्ध शतपथ ब्राह्मण का यह सन्देश— **'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमयेति ॥'** ऋषि जी का भाष्यार्थ—**"हे परम गुरो परमात्मन्! आप हमको असत् मार्ग से पृथक् कर सन्मार्ग में प्राप्त कीजिये। अविद्यान्धकार को छुड़ाके विद्यारूप सूर्य को प्राप्त कीजिये और मृत्यु रोग से पृथक् करके मोक्ष के आनन्द रूप अमृत को प्राप्त कीजिये।"** इनके अतिरिक्त विद्यालयों, महाविद्यालयों के उद्देश्यात्मक चिह्नों तक भी प्रसिद्ध हुआ 'यजुर्वेद' का वह सन्देश—**'विद्ययाऽमृतमश्नुते'** अर्थात् मनुष्य यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है।

वेद और वेदानुकूल बातें जो शास्त्रों में हैं, इन पर चलकर ही मनुष्य का कल्याण है। लोक में भी देखने में आता है कि जो इन बातों का, इन निर्देशों का, सन्देशों का उल्लंघन करता है, वह क्लेशों का, दु:खों का शिकार बनता है। ताश खेलने वाले, शराब आदि नशा करने वाले, चोरी-ठगी करने वाले, कामवासना के शिकार बने लोगों को देखकर आश्चर्य होता है कि चलना किस मार्ग पर था और चल किस मार्ग पर पड़े? साथ ही सावधानी तो विशेष उन्हें भी बरतनी थी व करनी चाहिए जो भटके हुए लोगों को रास्ता दिखाने निकले थे। ध्यान रखें कि कहीं वे स्वयं तो किसी अन्य मार्ग पर नहीं चल पड़े? आचार्य बलदेव जी सरलता से गंभीर संदेश दे देते थे, यही उनकी विशेषता थी। एक बार उन्होंने कहा कि मन पर नियंत्रण करने का विशेष प्रयास करते रहना चाहिए, नियमों व मर्यादाओं के पालन में विशेष सावधान रहना चाहिये, वरन् बड़े से बड़ा विद्वान् कब पतन का शिकार हो जाये, इसका पता नहीं चलता। स्वामी आशुतोष जी दर्शन योग महाविद्यालय सुन्दरपुर, रोहतक ने मासिक सत्संग दयानन्दमठ में एक बार अपने व्याख्यान में बड़ी बात कही। उन्होंने कहा कि वर्षों पहले जब से वे इस मार्ग पर चले, तब से लेकर अब तक एक दिन भी ऐसा नहीं जब उन्होंने प्रात:कालीन उदित होते सूर्य को न देखा हो, यानि वे इससे पहले ही उठकर दिनचर्या करते हैं। इस मार्ग पर चलकर भी आलस्य, प्रमाद करेंगे, ईश्वरभक्ति, स्वाध्याय से विमुख होंगे समझो वे इस पथ से भटक चुके हैं। ध्यान रहे लोकोपकार की शक्ति भी ईश्वरभक्ति से मिलती है। ऋषि जी ने यही तो कहा था कि योगबल से ही वे यह दुष्कर कार्य कर पा रहे हैं। शास्त्रार्थों से पहले लम्बी उपासना किया करते थे। ईश्वर का पाना ही तो श्रेयमार्ग का मूल प्रयोजन है। इस मार्ग पर चलने की शक्ति भी तो उसी की भक्ति से मिलती है। धर्मवीर पं० लेखराम से एक मुसलमान खुदा के नाम पर कुछ पैसे मांगता है। भावविभोर होकर लेखराम की आंखों से आंसू गिरने लगते हैं। आर्यपथिक उसे कहते हैं कि ईश्वर के नाम पर तूने मांगा भी तो क्या मांगा, यदि तूं मेरी जान भी मांगता तो मैं दे देता। आज लोकोपकार के लिए निकले किस-किस आर्यसमाजी में ईश्वर के प्रति इतना प्यार है, अपना-अपना चिंतन कीजिये। हम निकले थे किस मार्ग के लिए और चल पड़े किस मार्ग पर?

क्रमश: पृष्ठ 11 पर......

वेद में ईश्वर का स्वरूप

❑ कामता प्रसाद मिश्र

वेद में ईश्वर की जिन विशेषताओं का वर्णन किया गया है अथवा ईश्वर का जो शुद्ध रूप दिया गया है उसमें सर्वत्र पूर्णता एवं शुद्धता के दर्शन होते हैं, वह अन्यत्र नहीं है। अनेक धर्म, पंथ सम्प्रदायों ने ईश्वर के स्वरूप को वेद के उलटे भी बतलाये हैं, परन्तु निराकार, अजन्मा, शरीर रहित शुद्ध ईश्वर का जो रूप वेद में दिया गया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। वेद में ईश्वर के विषय में कहा है—**अपादशीर्षा।** (ऋ० 4.1.11) वह पांव सिर आदि अवयवों से रहित है। **अपादिन्द्रो अपादग्निः।** (ऋ० 8.69.11) परमैश्वर्यवान् परमात्मा निराकार है, प्रकाशस्वरूप परमात्मा निराकार अर्थात् आकार रहित है। **न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः।** (यजु० 32.3) जिस परमात्मा का महान् यश है उस परमात्मा की कोई मूर्ति और परिमाप नहीं है। अकायम् व्रणमस्नाविरम्। (यजु० 40.8) वह परमात्मा शरीर रहित, छिद्ररहित और नस-नाड़ी के बन्धन से रहित है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ईश्वर के स्वरूप की व्याख्या करते हुए आर्यसमाज के दूसरे नियम में यह कहा है—**''ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।''**

महर्षि ने ईश्वर को सच्चिदानन्द कहा अर्थात् परमात्मा सत् है, चित् अर्थात् चैतन्यस्वरूप है, आनन्द स्वरूप है। सत् वही हो सकता है जो सदा वर्तमान रहे, सदा वर्तमान वही रहेगा जो जन्म और मरण से रहित हो। यदि ईश्वर का जन्म माना जाये तो इसका अर्थ हुआ कि वह जन्म के पहले नहीं था अर्थात् वर्तमान में है किन्तु भूतकाल में नहीं था। यदि परमात्मा का जन्म माना जाएगा तो उसकी मृत्यु भी माननी होगी। यदि ऐसा माना जाएगा तो इसका अर्थ यह होगा कि वह वर्तमान में तो है परन्तु भविष्य में नहीं रहेगा। ऐसा पदार्थ सत्य नहीं हो सकता। सत् पदार्थ के लिए एक रस और कालातीत होना आवश्यक है।

चित् वह है जो चैतन्य स्वरूप, सत्यासत्य का जानने वाला है, वही ब्रह्म चित् है। चेतन उसे कहते हैं जिसमें जड़ता न हो।

ईश्वर आनन्द स्वरूप है। वह दुःख, क्लेश और शोक से रहित है। वह आनन्दमय है। जो जीवात्मा योगाभ्यास के द्वारा उसकी समीपता प्राप्त करते हैं, वे भी आनन्द की अनुभूति करते हैं। जो योगसाधना कर समाधि सिद्ध कर लेते हैं, उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है।

परमात्मा के प्रमुख तीन गुणों की यहां हम व्याख्या प्रस्तुत करते हैं जो मानवादि में कभी संभव नहीं है। उदाहरणार्थ—वेदों ने ईश्वर को **'सर्वव्यापक'** (Omnipresent) **'सर्वज्ञ'** (Omniscient) **'सर्वशक्तिमान्'** (Omnipotent) बताया है। ये तीनों मात्र परमात्मा में ही पाये जाते हैं। अन्यत्र कहीं भी नहीं बताया गया है। विश्व के किसी भी आस्तिक धर्म तथा दर्शन में परमात्मा का इससे बढ़कर कोई गुण या विशेषता नहीं बताई गई है। इन्हीं गुणों की व्याख्या यहां की जाती है। यहां परमात्मा के सब गुणों के सम्बन्ध में वेदों के उद्धरण न देकर उपर्युक्त तीनों श्रेष्ठ विशेषताओं के बताने वाले मन्त्रों को ही दिया जा रहा है।

ईश्वर सर्वव्यापक है—

एषो ह देवा प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः स उगर्भे अन्तः स एव जातः सजनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः॥ (यजु० 32.4)।

अर्थात् वह परमात्मदेव सब दिशाओं में है। सबसे पहले था, सबके अन्दर है, वह सब ओर देखने वाला पैदा हुए और पैदा होने वालों के सब ओर अर्थात् सर्वत्र व्यापक है।

अनन्तं विततं पुरुत्रानन्तमन्तवच्चा समन्ते।
ते नाकपालश्चरति विचिन्वन विद्वान् भूतमुत भव्यमस्य॥
(अथर्व० 10.8.13)

अर्थात् अन्त रहित ब्रह्म सर्वत्र फैला हुआ है। अनन्त और अन्तवाला इन दोनों को अलग-अलग करता हुआ और इसके भूत और भविष्य को जानने वाला सुख का पालनकर्त्ता होकर सर्वत्र विचरण करता है।

उपर्युक्त मन्त्रों से स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर सर्वत्र अर्थात् असंख्य ब्रह्माण्डों में सर्वव्यापक है, सभी प्राणियों तथा वनस्पतियों या कहें सम्पूर्ण जड़-चेतन का नियामक, पालक तथा परिवर्तन कर नवीन सृष्टि को नित्य सृजन करता है। वह परमात्मा सर्वव्याप्त होकर सभी ग्रह-उपग्रह को अनुशासन में रखकर उसके चाल का निर्धारण करता है जिससे सभी अपनी कक्षा में रहकर सूर्य की परिक्रमा करते हैं।

ईश्वर सर्वज्ञ है—

सर्वं तद्राजा वरुणो विचष्टे यदन्तरा रोदसी यत्परस्तात्। संख्याता अस्य निमिषो जनानां अक्षानीवश्वघ्नीनिमिनोति तानि॥ (अथर्व० 4.16.6)

अर्थात् द्युलोक और पृथ्वीलोक के बीच में जो कुछ है और जो कुछ उससे परे है संसार का स्वामी परमात्मा सबको देखता है। लोगों का पलक झपकना उसका गिना हुआ है, जैसे खेलने वाला अपने पासों को गिनता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर एक-एक परमाणु की गति, कार्य को सूक्ष्म रूप से देखता है कोई भी वस्तु उससे अछूती नहीं रहती वह सबका नियंत्रक और द्रष्टा है। वेद में भी कहा है—

सहस्त्रशीर्षापुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपाद। (यजु० 31.1)

उस ईश्वर के असंख्य शिर हैं, असंख्या आंख हैं और असंख्य पग हैं। वह सर्वज्ञ है, सबके अन्दर-बाहर सबका उसे ज्ञान है, वह सभी स्थूलभूत तथा सूक्ष्मभूत की गतिविधियों का नियामक और ज्ञाता है।

सांख्यदर्शन में भी कहा गया है—**स हि सर्ववित् सर्व कर्त्ता** (अ० 3.56) अर्थात् वह ब्रह्म सर्वज्ञ और सर्वकर्त्ता यानी सृष्टिकर्त्ता है। उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि परमात्मा सर्वज्ञ है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान् है—

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इन्द्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

(ऋ० 10.121.3)

अर्थात् जो अपने सामर्थ्य से प्राणवान अर्थात् श्वास लेने वाले और आंख की पलक झपकने वाले इस सम्पूर्ण जगत् का एकमात्र स्वामी है। जो सम्पूर्ण दो पैर वाले मनुष्यादि एवं चार पैरों वाले पशु आदि प्राणियों का स्वामी है, उस सुखस्वरूप परमेश्वर की हम श्रद्धा और विशेष भक्ति से उपासना करें। वही परमात्मा समग्र सृष्टि का निर्माता, पालक एवं रक्षक है।

कुछ लोगों ने यह धारणा बना लिया है कि वेद में अनेक ईश्वरों का वर्णन है। परन्तु महर्षि दयानन्द जी ने 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रथम समुल्लास में स्पष्ट व्याख्या किया है कि परमात्मा एक है उसके अनेक नाम हैं। जैसे-अग्नि, मित्र, वरुण, विष्णु, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र आदि। वेद में स्पष्ट लिखा है—**एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति**। वह ईश्वर एक है जो सत्य है। विद्वान् लोग उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। वेद में एकेश्वरवाद की पुष्टि की गई है और बहुदेवतावाद को स्पष्ट नकार दिया है। वेदों में वर्णित ईश्वर तथा अन्य धर्मों व पंथों में वर्णित ईश्वर में एक बहुत बड़ा अन्तर है। वेदों में ईश्वर से हमारा सीधा सम्बन्ध है ईश्वर तक पहुंचने के लिए स्वयं ईश्वर का कृपापात्र बनने के लिए किसी अन्य माध्यम की आवश्यकता नहीं है। वेदों की मान्यतानुसार मानव जीवन का परम उद्देश्य मोक्ष तक पहुंचने के लिए परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य माध्यम पर अंधा विश्वास नहीं करना होता। यजुर्वेद का मन्त्र इन बातोंको स्पष्ट करके मनुष्य समुदाय को आदेश संदेश तथा निर्देश देता है। यहाँ प्रस्तुत है—

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वा अतिमृत्युमेति नान्या पंथा विद्यते अयनाय॥

(यजु० 31.18)

महर्षि दयानन्द जी यजुर्वेद भाष्य में इसका अर्थ कर कहते हैं—सूर्य के समान प्रकाशपुञ्ज, सर्वरक्षक उस पुरुष (ईश्वर) को यदि मनुष्य इस लोक और परलोक के सुखों की इच्छा करें तो सर्वश्रेष्ठ आनन्द स्वरूप अज्ञान के लेश से पृथक् परमात्मा को जानकर ही भक्त मृत्यु को पार करता है। वह दु:खसागर से पृथक् हो सकता है, इसके अतिरिक्त मुक्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं है। यही सुखदायी मार्ग है।

उपर्युक्त मंत्र यह भी निराकरण कर देता है कि मनुष्य को ईश्वर तक पहुंचने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं है। वेदों में यह भी स्पष्ट किया गया है कि असंख्य ब्रह्माण्डों में उसे परमात्मा का एकक्षत्र राज्य है। उससे बड़ा या बराबर का भी कोई अन्य शक्ति नहीं। अन्य धर्मों, मजहबों में एक और शक्ति की कल्पना की गई है। इस्लाम और ईसाइयों में ईश्वर का प्रतिद्वन्द्वी 'शैतान' है, यहाँ उसकी शक्ति गॉड या खुदा से कुछ ही कम है। किन्तु वेदों में एकेश्वर का अखण्ड राज्य है कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं है।

स्पष्ट रूप से हम कह सकते हैं कि वेद सृष्टि के साथ प्रारम्भ के हैं, एक ईश्वर के अतिरिक्त कोई दूसरी शक्ति नहीं है। वेद परमात्मा की वाणी है जो नित्य है। उसमें परमात्मा को शुद्ध, पूर्ण तथा सर्वश्रेष्ठ सत्ता के रूप में प्रतिपादित किया है। पौराणिक आदि विचारधाराओं में ईश्वर के अनेक रूप और ईश्वर के प्रतिद्वन्द्वी साथ-साथ पूजा के साधन हैं। पौराणिकों को इस वैज्ञानिक युग में अपने विचारों पर चिन्तन मनन करना होगा और तर्क तथा विज्ञान की कसौटी पर सत्य को ग्रहण करना होगा जिससे वे अन्य धर्मों द्वारा किये गये आक्षेपों का उत्तर दे सकें। अत: ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान् है, यही उपासना योग्य है।

संपर्क—म०नं० 2475 निराला नगर (शिवपुरी) सुलतानपुर (उत्तर-प्रदेश)

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

नवम समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 680. जो मनुष्य '**उत्तम तमोगुणी**' होते हैं वे कैसे जन्म को प्राप्त होते हैं?

उत्तर-वे चारण, (जो कि कवित्त, बनाकर मनुष्यों की प्रशंसा करते हैं), सुन्दर पक्षी, दाम्भिक पुरुष अर्थात् अपनी मुख से अपनी प्रशंसा करने हारे, राक्षस जो हिंसक-पिशाच, जो अनाचारी अर्थात् मद्यादि के आहारकर्त्ता और मलिन रहते हैं, ये '**उत्तम तमोगुण**' के कर्मों का फल है।

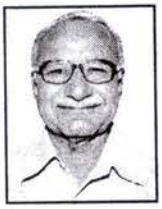

प्रश्न 681. जो '**अत्यन्त रजोगुणी**' हैं, वे कैसे जन्म को प्राप्त होते हैं?

उत्तर-वे तलवार आदि के मारने, कुदाल आदि से खोदने हारे, मल्लाह अर्थात् नौका आदि के चलाने वाले, नट जो बांस आदि पर कला दिखाने वाले, शस्त्रधारी भृत्य और मद्य पीने में आसक्त हों, ऐसे जन्म '**अत्यन्त रजोगुणी**' का फल है।

प्रश्न 682. जो '**मध्यम रजोगुणी**' होते हैं, वे कैसे जन्म को प्राप्त होते हैं?

उत्तर-वे राजा, क्षत्रिय वर्णस्थ राजाओं के पुरोहित, वाद-विवाद करने वाले दूत, वकील, युद्ध विभाग के अध्यक्ष के जन्म पाते हैं।

प्रश्न 683. जो '**उत्तम रजोगुणी**' हैं, वे कैसे जन्म को प्राप्त होते हैं?

उत्तर-वे गाने वाले गायक, संगीतकार, यक्ष (धनाढ्य विद्वानों के सेवक) और अप्सरा अर्थात् जो उत्तम रूप वाली स्त्री का जन्म पाते हैं।

प्रश्न 684. जो मनुष्य '**प्रथम सत्त्वगुण**' वाले हैं, वे कैसे जन्म को प्राप्त होते हैं?

उत्तर-वे तपस्वी, यति, संन्यासी, वेदपाठी, विमान के चलाने वाले, ज्योतिषी और देह विशेषज्ञ मनुष्य होते हैं।

प्रश्न 685. जो मनुष्य '**मध्यम सत्त्वगुण**' होकर कर्म करते हैं, वे कैसे जन्म को प्राप्त करते हैं?

उत्तर-वे जीव यज्ञकर्त्ता, वेदार्थवित्, विद्वान्, वेद-विद्युत्-काल आदि विद्या के ज्ञाता, रक्षक, ज्ञानी और कार्यसिद्धि के लिए योग्य अध्यापक का जन्म पाते हैं।

प्रश्न 686. जो मनुष्य '**उत्तम सत्त्वगुण**' युक्त होकर कर्म करते हैं, वे कैसे जन्म पाते हैं?

उत्तर-वे ब्रह्मा=सब वेदों का वेत्ता, विश्वसृज्=सब सृष्टिक्रम विद्या को जानकर विविध विमानादि यानों को बनाने हारे, धार्मिक सर्वोत्तम बुद्धियुक्त और अव्यक्त के जन्म और प्रकृतिवशित्व सिद्धि को प्राप्त होते हैं।

प्रश्न 687. जो मुक्त होना चाहते हैं, वे मनुष्य क्या करें?

उत्तर-वे सब गुणों के स्वभाव में न फँसकर महायोगी होकर मुक्ति का साधन करें। योगदर्शन के अनुसार मनुष्य रजोगुण, तमोगुणयुक्त कर्मों से मन को रोक शुद्ध सत्त्वगुणयुक्त कर्मों से भी मन को रोक अर्थात् सब ओर से मन की वृत्ति को रोकना है।

प्रश्न 688. सबके द्रष्टा ईश्वर के स्वरूप में जीवात्मा की स्थिति कब होती है?

उत्तर-जब चित्त एकाग्र और निरुद्ध होता है तब सब के द्रष्टा ईश्वर के स्वरूप में जीवात्मा की स्थिति होती है।

प्रश्न 689. '**अत्यन्त पुरुषार्थ**' किसको कहते हैं?

उत्तर-जो आध्यात्मिक अर्थात् शरीर सम्बन्धी पीड़ा, आधिभौतिक अर्थात् जो दूसरे प्राणियों से दुःखित होना, आधिदैविक जो अतिवृष्टि, अतिताप, अतिशीत, मन, इन्द्रियों की चंचलता से होता है, इन त्रिविध दुःखों को छुड़ाकर '**मुक्ति पाना**' अत्यन्त पुरुषार्थ कहलाता है।

दशम समुल्लास के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 690. कौन-सा धर्म माननीय और करणीय है?

उत्तर-मनुष्यों को सदा इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि जिसका सेवन राग-द्वेष रहित विद्वान् लोग नित्य करें, जिस को हृदय अर्थात् आत्मा से सत्य कर्म जाने, वही धर्म माननीय और करणीय है।

क्रमशः अगले अंक में......

मनुष्य अपने भाग्य का विधाता स्वयं है

यह संसार नरक नहीं है। इसको नरक और स्वर्ग मनुष्य ही बनाता है। यह कर्मभूमि है। तपस्वी लोग यहाँ आकर तप करते हैं, यह देवभूमि है। देवता यहाँ आकर यजन करते हैं। असुर लोग अपने स्वभावानुसार असुर लोक में उपद्रव करते हैं, तो यहां आकर भी उत्पात ही मचाते हैं। परन्तु इस भूमि का यह गुण है कि यहाँ जो जैसा बीज बोता है वह वैसा ही फल पाता है। यह मनुष्य शरीर पुण्य करने के लिए ही प्राप्त हुआ है। मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का विधाता है। इस मानव शरीर में बोये हुये बीज का फल काटने के लिए जीवात्मा को चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है। मानव ही एक कर्म योनि है, शेष सब तो भोग योनियां हैं। अत: मानव योनि में रहकर जीवात्मा स्वयं अपने हाथों अपने भाग्य का सर्जन करता है।

आज मानव जाति ने धर्म और सम्प्रदाय को एक ही चीज मान लिया है, लेकिन यह अलग-अलग हैं। धर्म मनुष्य मात्र को धारण करने वाली सच्चाइयों या नियमों का नाम है और सम्प्रदाय अनेक हैं। मत-पंथ अनेक हैं, वे मनुष्य समाज को बांटते हैं। राजनीति को स्वच्छ व पवित्र बनाने के लिए धर्म का सहचार आवश्यक है। उसके बिना राजनीति अन्धी है और राजनीति के बिना धर्म लंगड़ा है परन्तु सम्पदाय महाविनाशक और भयावह है। इसलिए राजनीति धर्मसम्मत और पंथ निरपेक्ष होनी चाहिए। धर्म की भांति मनुष्य मात्र की जाति भी एक है। अत: जातिवाद का प्रश्न ही निरर्थक और बेबुनियाद है जबकि वर्णव्यवस्था शुद्ध राष्ट्रीय व्यवस्था होने से परम आवश्यक है।

भगवान् कृष्ण का अमर संदेश है अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्-जो कर्म मैंने किये या कर रहा हूँ, उसका अच्छे कर्म का फल अच्छा और बुरे कर्म का फल बुरा मुझे ही प्राप्त होगा। परमात्मा की इसी अटल न्याय व्यवस्था में कोई पक्षपात या सिफारिश नहीं है। व्यक्ति अपने ही बुरे कर्मों से नरक भोगता है, कोई किसी को स्वर्ग या नरक नहीं देता है। व्यक्ति अपने कर्म से उठता तथा अपने कर्म से ही नीचे गिरता है। परमात्मा की अदालत में कोई वकील, दलील और अपील नहीं चलती है। उसकी वार में आवाज नहीं होती है। प्रेरक कथन हमें सचेत कर रहा है—

कण-कण में बसा प्रभु देख रहा, चाहे पाप करो चाहे पुण्य करो। कोई उसकी नजर से बच न सका।

हम शान्ति चाहते हैं, मगर काम अशान्ति के कर रहे हैं। सुख चाहते हैं परन्तु काम दु:ख के कर रहे हैं। निरोग होना चाहते हैं, परन्तु खान-पान सहन-सहन रोगी बनने के करते हैं। यह दुनिया अपने में बड़ी समझदार है। सब कामों के लिए समय निकाल लेते हैं, परन्तु सत्संग, स्वाध्याय, प्रभुभक्ति, साधना, सेवा आदि के लिए उनके पास समय नहीं है। यदि मजबूरीवश ऐसी जगहों पर जाना पड़े तो वहाँ केवल समय काटने के लिए ही जाते हैं। सत्संग कथा-प्रवचन, यज्ञ आदि जीवन को सुधारते हैं। ये बातें बुराइयों व दोषों को छुड़ाने में ब्रेक का काम करती हैं। इनसे हमें ज्ञान की रोशनी मिलती है। सत्संग में हमें विचार मिलते हैं, विचारों से हृदय बदलता है और ज्ञान प्राप्त होता है। वैदिक सत्संग में आदमी को पता नहीं कि कौन-सा शब्द आदमी की बुराइयों को अच्छाई में बदल सकता है। भक्त अमीचन्द को महर्षि दयानन्द ने कहा था कि अमीचन्द हो तो तुम हीरे परन्तु कीचड़ में पड़े हुए हो। महर्षि के यह शब्द सुनकर अमीचन्द में सुधार आया तो उन्होंने लिखा—

तुम्हारी कृपा से जो आनन्द आया,
वाणी से जाये यह क्योंकर बताया।
तुम्हारी दया से अजी मेरे भगवन्,
मेरी जिन्दगी ने अजब पलटा खाया॥

जो मनुष्य नीचों का संग छोड़कर उत्तम पुरुषों की संगति करते हैं, वे सब व्यवहारों की सिद्ध से ऐश्वर्य वाले होते हैं। जो अनालसी होकर सिद्धि के लिये यत्न करते हैं, वे सुखी और जो आलसी होते हैं, वे दरिद्रता को प्राप्त होते हैं (यजु०)। मनुष्य की सब कामना पूरी करने वाले परमेश्वर की आज्ञापालन करके और अच्छी प्रकार पुरुषार्थ से विद्या का अध्ययन, विज्ञान, शरीर का बल, मन की बुद्धि, कल्याण की सिद्धि तथा उत्तम से उत्तम लक्ष्मी की प्राप्ति सदैव करनी चाहिए तथा व्यवहार और पदार्थों को शुद्ध करना चाहिए (यजु०)।

दु:ख के नाना बोल हैं, सुख के हैं दो बोल।
सच्चा जीवन सादगी, भोजन करे सो तोल॥

शेष पृष्ठ 14 पर....

झूठ का खुलासा

आदरणीय आर्य प्रतिनिधिगण और आर्यजनो! नमस्ते।

पूर्व सभामन्त्री के हस्ताक्षरित द्वारा दयानन्द महिला महाविद्यालय के प्रिंसिपल को डाला गया पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में प्रकाशित किया जा रहा है—

गत वर्ष हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के चुनाव में पराजित लोग अपनी पराजय के तुरन्त बाद से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के विरुद्ध द्वेषवश निरन्तर दुष्प्रचार अभियान चला रहे हैं। तथ्यों से हजारों कोस दूर ऐसे-ऐसे आरोप लगाए जा रहे हैं जिनको सुन-पढ़कर सिर्फ हँसा जा सकता है। ऐसा ही एक आरोप पत्र तैयार करके प्रतिनिधियों में से कुछ को धोखे में रखकर उनसे हस्ताक्षर करवाने के प्रयास किये जा रहे हैं, उनमें से अधिकांश को यह आरोप-पत्र पढ़ाया भी नहीं जा रहा है। आरोप पत्र में दो विषय मुख्य रूप से उठाए गए हैं—

1. सभा के मन्त्री श्री योगेन्द्र आर्य को मन्त्री पद से निष्कासित कर दिया गया है।
2. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की सम्पत्तियों के प्रबन्धन का अधिकार किसी अन्य संस्था को दिये जाने के प्रयास हैं। जैसे—**कुरुक्षेत्र का दयानन्द महिला महाविद्यालय।**

आर्यबन्धुओ! इन दोनों विषयों पर संक्षेप में जानकारी आपको दी जा रही है। इसकी विस्तृत जानकारी आपको प्रमाण-पत्र सहित एक श्वेत-पत्र द्वारा जल्दी ही दी जाएगी।

1. श्री योगेन्द्र आर्य पर आचरण सम्बन्धी और अनियमितताओं के अनेक आरोप लगे, जिनके विषय में कार्यकारिणी के कई सदस्यों ने बैठक कर उनसे भविष्य में सुधार करने का आग्रह समय-समय पर किया गया। हुआ उल्टा। उनकी निरंकुशता ने और गति पकड़ ली। उन्हें कारण बताओ नोटिस दिया गया। कार्यकारिणी ने उन्हें अपनी बैठक में लगभग चार घण्टे सुना। उन पर लगे आरोप सच पाए गए। योगेन्द्र आर्य के अहंकारी और धमकी भरे अन्दाज से असहमत होकर उनसे मन्त्री पद का दायित्व वापिस ले लिया। सभा किन्हीं नियमों से चलती है मनमर्जी से नहीं। वैसे यह भी ध्यातव्य है कि चुनाव के दौरान जिन लोगों ने उन पर कई तरह के गंभीर आरोप लगाये थे आज आरोप लगाने वाले यकायक उनके हिमायती कैसे हो गये? षड्यंत्र या सिद्धान्त?

2. जहां तक बात है कि सभा की सम्पत्तियों की है तो निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें—

(क) क्या आरोप लगाने वाले कोई प्रमाण देंगे कि वर्तमान कार्यकारिणी ने किस सम्पत्ति को किस अन्तरंग सभा में किस प्रस्ताव के जरिए किस व्यक्ति को दिया गया? अफवाह शास्त्र में माहिर लोग क्या इसका कोई प्रमाण देंगे? बिना आधार के आरोप लगाकर आर्यजनों को भ्रमित करने वालों का इरादा क्या है, सभी समझ चुके हैं।

(ख) आरोप लगाने वालों ने उदाहरण दिया है कि दयानन्द महिला महाविद्यालय का। जबकि स्थिति यह है कि 1981 में सभा के तत्कालीन अधिकारियों ने यह जमीन कुरुक्षेत्र के आर्यों को आदर्श आर्य उच्च कन्या विद्यालय नाम से बेटियों का उच्च शिक्षण संस्थान बनाने के लिए प्रदान की थी। 1981 से उस पर बेटियों की उच्चतम शिक्षा के लिए दयानन्द महिला महाविद्यालयं नाम से एक कॉलेज कार्य कर रहा है। यह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय तथा हरियाणा सरकार के सम्बद्धता नियमों के साथ तभी से कार्यरत है। वर्तमान कार्यकारिणी में महाविद्यालय का प्रबन्धन या नियन्त्रण किसी को भी दिये जाने का प्रस्ताव नहीं किया है। सभा ने अपनी अन्तरंग सभा में इस कॉलेज के 1981 से ही चले आ रहे नाम 'दयानन्द महिला महाविद्यालय' की सम्पुष्टि भर की है जो कि स्वयं श्री योगेन्द्र आर्य के हस्ताक्षरों से प्रेषित है। ये महाबुद्धिमान यह तो बताएं कि यदि इस पर आपत्ति थी तो श्री योगेन्द्र जी ने इस पर हस्ताक्षर करके इस पत्र को क्यों प्रेषित किया और इस प्रस्ताव में सभा की परिसम्पत्ति को किसी व्यक्ति को देने का उल्लेख कहां है? झूठ के पांव नहीं होते (प्रमाण-स्वरूप प्रतिलिपि संलग्न है)। झूठा प्रचार करने वाले आखिर में अपमानित होते हैं।

(ग) मौखिक रूप से कहा जा रहा है कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र को हड़पने की कोशिश हो रही है। आर्यजनों आपने भी गुरुकुल कुरुक्षेत्र देखा होगा। क्या वह बिना

व्यवस्था, बिना कठोर परिश्रम, बिना अनुशासन, बिना ईमानदारी के ही इस मुकाम पर पहुँच गया? ये बाकी संस्थाएं जिनमें आरोप गढ़ने वाले बैठे हैं उस स्थिति को क्यों नहीं पहुँच पाई? ऐसा कौन-सा नियम या व्यवस्था है जो आचार्य बलदेव जी महाराज या आचार्य विजयपाल जी के प्रधान रहते हुए गुरुकुल कुरुक्षेत्र या दयानन्द कालेज में नहीं थी और वर्तमान प्रधान श्री रामपाल आर्य के समय में हो गई? गुरुकुल कुरुक्षेत्र पूर्णरूप से सभा के अधीन चलता है तथा वहां निरन्तर वेदप्रचार का कार्य हो रहा है। 20 लोगों की टीम गुरुकुल की निगरानी में वेदप्रचार में संलग्न हैं। निरन्तर शिविर वहां लगते हैं तथा देश का एकमात्र भजनोपदेशक विद्यालय भी वहीं पर चलता है। अब आरोप लगाने वाले यह बतायें कि जिन संस्थाओं में ये बैठे हैं उन संस्थाओं की स्थिति क्या है और उनके द्वारा कितना वेदप्रचार का कार्य हो रहा है?

(घ) वर्तमान प्रधान श्री रामपाल आर्य की अगुवाई में सभा ने न केवल दयानन्दमठ की दशा सुधारी है, बल्कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की पूरे हरियाणा में जो जायदाद है, उनका रिकार्ड भी तैयार कराया है, जो अब तक नहीं था, जिससे यह जानकारी प्राप्त हुई है कि सभा की जमीनें कहाँ-कहाँ हैं और उन पर कौन-कौन काबिज है? आरोप लगाने वाले और उनके रिश्तेदार सभा की जमीन पर काबिज हैं। प्रधान जी ने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की सैकड़ों करोड़ की लगभग छह एकड़ जमीन को अपनी जान पर खेलकर बचाया है।

वास्तव में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की जमीन को पिछले अधिकारियों ने जिस तरह से पट्टों पर दे-देकर लुटाया, नाजायज कब्जे कराये व किराये की गलत रसीदें जारी कीं, उन कब्जाधारियों के विरुद्ध कार्यवाही की जा रही है तथा मिलीभगत का पर्दाफास हो रहा है, जिससे आरोप लगाने वाले भयभीत हैं। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की भूमि पर अवैध कारोबार चलाने वाले भूमाफिया गिरोह पर पूरी लगाम डाल दी है और उनका कारोबार ठप्प हो चुका है। इसलिए उस गिरोह के इशारे पर कुछ पथप्रष्ट लोग सभा के कार्य को बाधित करने की नीयत से झूठे आरोप लगा रहे हैं। इन्हीं भूमाफियों के पैसे और इशारे पर यह लोग सभा के विरुद्ध एक वातावरण तैयार करने का प्रयास कर रहे हैं। यहाँ तक कि शहीदी दिवस पर बेरी में बुलाये गए सम्मेलन में भी मुख्य विषय को छोड़कर आर्यसमाज के मान्य संगठन और संस्थाओं के विरुद्ध विष-वमन किया गया। पूर्व में सभा की परिसम्पत्तियों की किस तरह से चहेतों व रिश्तेदारों में बन्दरबाट हुई है इसका प्रमाणिक दस्तावेजों सहित श्वेत-पत्र जल्दी ही आर्यजनता की सेवा में प्रस्तुत किया जाएगा।

—सभामंत्री

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक (हरयाणा)

दूरभाष: 216222 चलभाष: 08901387993

Website: www.apsharyana.org Email: aryapsharyana@~~gmail.com~~ yahoo.in

क्रमांक 2046 Regd. दिनांक 17-4-2017

कार्यवाही अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 8 अप्रैल 2017 के प्रस्ताव संख्या-11 की सत्य-प्रतिलिपि

प्रस्ताव संख्या-11

डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार कुरुक्षेत्र ने सदस्यों को बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने 7.4.81 में कुरुक्षेत्र में सभा की अढ़ाई एकड़ भूमि पर आर्य आदर्श उच्च कन्या विद्यालय की स्थापना की स्वीकृति प्रदान की गई थी। इस आशय का पालन करते हुए इस भूमि पर कन्याओं की उच्च और उच्चतर शिक्षा के लिए दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र के नाम से संस्था स्थापित हुई। अब यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा का केन्द्र है। सभा के पत्र दिनांक 7.4.81 की निरन्तरता में इस जमीन पर आर्य आदर्श उच्च कन्या विद्यालय नामके स्थान पर 'दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र' नाम की स्वीकृति प्रदान की जाती है।

विचार विमर्श के पश्चात् सर्वसम्मति से इस जमीन पर आर्य आदर्श उच्च कन्या विद्यालय नाम के स्थान पर दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र नाम की स्वीकृति दी गई।

सेवा में
प्रिंसिपल
दयानन्द महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र

प्रमाणित
(आचार्य योगेन्द्र आर्य)
सभामन्त्री

कूटनीतिज्ञ महाराजा सूरजमल

—आनन्ददेव शास्त्री (पूर्व प्रवक्ता संस्कृत) दिल्ली सरकार

प्रसिद्ध अफगान लुटेरा अहमदशाह अब्दाली (दुर्रानी) ने भारत पर कई आक्रमण किये, जिनमें चौथा आक्रमण 1756-57 में किया।

इस समय दिल्ली की राजधानी एक नया मोड़ ले रही थी। बादशाह आलमगीर सानी वजीर इमाद की मनमानी से परेशान था। नजीब खां रुहेला भी इमाद खां की इस प्रवृत्ति से ईर्ष्या करने लगा। राजधानी दिल्ली में अब दोनों शक्तियों में झगड़ा प्रारम्भ हो गया। नजीब को भय था कि वजीर इमाद कहीं मराठों से गठजोड़ करके उसका विनाश न कर दे। नजीब खां ने अपनी सहायता के लिए अहमदशाह दुर्रानी से सांठगांठ आरम्भ कर दी तथा उसे भारत पर आक्रमण करने के लिए निमन्त्रित किया। निमन्त्रण-पत्र में लिखा था कि ''जाट राजा सूरजमल की शक्ति निरन्तर बढ़ रही है। उसके राज्य में कोई भी व्यक्ति मुस्लिम रिवाज के अनुसार (अजान) प्रार्थना नहीं दे सकता।''

अवध का नवाब शुजाउद्दोला यह नहीं चाहता था कि प्रभावहीन दिल्ली के बादशाह के स्थान पर दुर्रानी स्थायी रूप से दिल्ली में बस जाये। राजा सूरजमल भी इस बात को अच्छी तरह जानता था कि इस क्षेत्र पर आक्रमण उसके राज्य के मूल्य पर होगा। दिल्ली दरबार का इस समय इतना पतन हो चुका था कि दुर्रानी पर किसी ने एक गोली भी नहीं चलाई, केवल महाराजा सूरजमल ही उसके मुकाबले पर आया। यद्यपि राजा सूरजमल यह अच्छी तरह जानता था कि मराठे भी उसके लिए घातक हैं, किन्तु भारतीय होने के कारण राजा सूरजमल ने उनका साथ दिया। सूरजमल ने प्रस्ताव रखा कि नजीब खां को बिल्कुल समाप्त कर देना चाहिए तथा इमाद खां के स्थान पर अवध के नवाब सुजाउद्दोला को वजीर बनाना चाहिए। किन्तु जब मराठों ने उसकी बात नहीं मानी तब उसने अपने राज्य की सुरक्षा पर ध्यान दिया। उसने अब्दाली के पास अपना दूत भेजकर कहा कि ''मैंने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा है। अत: मेरे राज्य पर आक्रमण न करें।'' किन्तु अब्दाली तो लूट के लिए ही आया था, उसने इस प्रस्ताव पर कोई ध्यान न दिया। अब्दाली ने सूरजमल को अपने पड़ाव में आने का निमंत्रण दिया। किन्तु सूरजमल वहां नहीं गया तथा कुम्भेर के किले में सुरक्षा के उपाय करने लगा।

अब्दाली की लूट-अब्दाली ने सुन रखा था कि भारत में दो ही व्यक्ति धनाढ्य हैं, प्रथम सूरजमल तथा दूसरा अवध का नवाब शुजाउद्दोला। किन्तु दुर्रानी सब प्रयत्नों के बाद भी महाराजा सूरजमल से एक कौड़ी भी नहीं निकलवा पाया। सर्वप्रथम अब्दाली ने बल्लभगढ़ पर आक्रमण किया। वहाँ सूरजमल के पुत्र जवाहर सिंह ने अब्दाली के एक सैनिक दल को काट डाला। इससे अब्दाली क्रोध से आगबबूला हो गया तथा उसने अपने सेनापति अब्दुल समद को कत्लेआम तथा लूट का आदेश दे दिया। अब्दाली की एक टुकड़ी का पीछा करते हुए जवाहर सिंह उसके घेरे में आ गया। किन्तु चतुराई से बड़ी कठिनाई से बचकर निकल गया। अब्दाली के सैनिकों ने जनता में कत्लेआम तथा लूट प्रारम्भ कर दी। 12 फरवरी 1757 को अब्दाली दिल्ली से कुम्भेर, डीग तथा भरतपुर को जीतने चला।

अब्दाली ने अपने सेनापति जहान खां तथा नजीबुद्दोला को आदेश दिया कि ''तुम बल्लभगढ़ जाओ, सूरजमल वहीं पर है, नगर के सभी निवासियों का कत्ल कर दो तथा लूट लो। आगरा तक कुछ भी सबूत न बचे। लूट की सम्पत्ति सैनिकों की ही रहेगी। एक सिर काटने पर पांच रुपये मिलेंगे। सिर लाकर मेरे खेमे के सामने डाल देना।''

एक सैय्यद अफगान ने इसका वर्णन निम्न शब्दों में किया है—यह मध्य रात्रि का समय था जब अब्दाली ने आक्रमण किया। एक सरदार घोड़े पर बैठा था, उसने बीस घोड़ों की पूंछ आपस में बांध रक्खी थी, प्रत्येक घोड़े पर लूट का सामान लदा था, सभी घुड़सवार लूट का सामान लिए हुए थे। उनके साथ पकड़े हुए स्त्री-पुरुष भी थे। प्रत्येक पकड़े हुए व्यक्ति के सिर पर कटे हुए सिरों की गठरी रक्खी थी। कटे सिरों से मीनार बनाई गई तथा अपने सिर पर गठरी रखकर आए हुए व्यक्तियों से पहले चक्की पिसवाई जाती तथा बाद में उनका सिर काट लिया जाता।

बल्लभगढ़ के बाद अब्दाली की दृष्टि मथुरा पर पड़ी। मथुरा बिना परिखा बिना किले का नगर था। अत: सूरजमल ने मथुरा की रक्षा के लिए 5000 सैनिक जवाहर सिंह के नेतृत्व में मथुरा भेज दिया। मथुरा के किसान भी उसकी

सहायता के लिए तैयार बैठे थे। मथुरा से पहले 'चौमुहा' स्थान पर जवाहर सिंह ने अब्दाली की सेना को रोक लिया। दस घण्टे तक युद्ध चला, जिसमें दोनों पक्षों के लगभग 12 हजार लोग मारे गए। अन्त में जवाहर सिंह वहां से हट गया तथा डीघ में जाकर मोर्चा संभाला। दुर्रानी के सैनिकों ने जो अत्याचार किये वे श्री कानूनगो के शब्दों में पढ़िये—"होली के दो दिन बाद मथुरा वासियों को खून की होली खेलनी पड़ी। जिन माताओं के हाथों से स्तनों से दूधमुंहे बच्चे छीनकर मारे जा रहे थे, उन के रोने के शब्द से आकाश गूंज उठा। यमुना का पानी नररक्त से लाल हो गया। हिन्दू संन्यासियों के गले काटकर उनके साथ गौओं के कटे गले बांध दिये गये। दुर्रानी के अत्याचारों से हिन्दू ही पीड़ित हुए हों, ऐसी बात न थी। चाहे मुसलमानों ने अपने नंगे शरीर दिखा (खतना दिखा) प्राण बचा लिये हों तो भी उनकी बहू-बेटियों की इज्जत धूल में मिला दी गई।" लूटपाट करने की इच्छा से अब्दाली की सेना ने गोकुल पर हमला किया। वहां पर इकट्ठे हुए लगभग चार हजार संन्यासियों ने शत्रु का डटकर मुकाबला किया। दो हजार संन्यासी इतने ही सैनिकों को मारकर स्वर्ग सिधार गये। गोकुल बच गया। लेकिन वृन्दावन में अब्दाली के सैनिकों को कोई कठिनाई नहीं आई। उसने यहां भी यमुना में स्नान करने आते जाते, संसार से मुक्ति पाने के इच्छुक लोगों को तलवार से काट डाला। इस लूटमार से अभी अब्दाली की सेना का मन नहीं भरा था, अत: उसका अगला निशाना आगरा था। क्योंकि अब्दाली सेना ने सुना कि आगरा में राजा सूरजमल की प्रजा के बहुत से धनी लोग रहते हैं। जब धनी लोगों को पता चला कि यहां भी बल्लभगढ़, मथुरा आदि की भांति लूटपाट होगी, तो वे पांच लाख रुपये भेंट के रूप में देने के लिए अब्दाली के सेनापति के स्वागत के लिये चल पड़े। परन्तु सेनापति लूटपाट के लिए उतावला था, उसने इनके पहुंचने से पहले ही लूटमार का आदेश दे दिया। किन्तु सेनापति को आशा से अधिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। दूसरी तरफ अब्दाली के सिपाहियों को बहुत दिनों से घर से दूर रहने के कारण घर की याद सता रही थी, अत: अब्दाली वृन्दावन भी मथुरा की लूट तथा बर्बादी के बाद जाट राज्य के डीघ तथा कुम्भेर आदि को बिना जीते ही अपने देश के लिए वापिस चल पड़ा।

क्रमशः अगले अंक में...

गायत्री मंत्र–गुरुमन्त्र–गुरु परमात्मा है

—कृष्णा देवी आर्या, (प्रधान महिला मंडल)
आर्यसमाज गाँव बालन्द, जिला रोहतक

गतांक से आगे....

पांच नियम ये हैं—

1. **शौच**-जल द्वारा शरीर, वस्त्र और मकान आदि के मल को दूर करना बाहर की शुद्धि है। भोजन शुद्धि, जप-तप और शुद्धि विचार-राग-द्वेषादि मलों का नाश करना भीतर की पवित्रता है। 2. **सन्तोष**-कर्त्तव्य कर्म का पालन करते हुए उसका जो कुछ परिणाम हो, अपने आप जो कुछ भी प्राप्त हो, जिस अवस्था और परिस्थिति में रहने का संयोग प्राप्त हो जाये, उसी में सन्तुष्ट रहना और किसी प्रकार की भी कामना या तृष्णा न करना, सन्तोष है। 3. **आसन**-बिना हिले-डुले साधक अपनी इच्छा से ज्यादा समय तक बैठ सके, जिधर से वायु आ रही हो उसी का आसन है। 4. **प्राणायाम**-प्राणवायु को पहले बाहर रोक देना, मन्त्र जपते रहना। जब सास अन्दर ले जाना रोक देना, प्राणायाम मन्त्र मन में जपते रहना, तीन प्राणायाम अवश्य करें। 5. **प्रत्याहार**-जो मन और इन्द्रियों को बाहर विषयों की ओर न जाकर चित्त में समा-सा जाना है, यह प्रत्याहार सिद्ध होने की पहचान है। इन्द्रियां साधक के वश में हो जाती हैं। 6. **धारणा**-नाभिचक्र, हृदयकमल, मस्तक में, रीढ़ की हड्डी में धारण करना धारणा है। किसी भी एक जगह चित्त को लगाना। 7. **ध्यान**-जहां चित्त को लगाया जाये, उसी में एक तार विचार चलता रहे। कोई भी बाहरी विचार न उठना ध्यान है। 8. **समाधि**-ध्यान करते-करते जब शून्य-सा हो जाना, अपने आप को भूल-सा जाना, ध्यान ही समाधि हो जाता है।

किधर चल पड़े ?....... पृष्ठ 3 का शेष.......

हम ऐसे मार्ग पर आ जाते हैं, जहाँ ईर्ष्या-द्वेष है, छल-कपट है, निन्दा-षड्यंत्र है। यह सब लोभ, इच्छा, आलस्य, प्रमाद का परिणाम है। कुलोभ, कुकामनाओं का त्याग ही हमें श्रेय मार्ग का पथिक बनाता है। इस मार्ग पर चलने वालों से, सच्चे साधकों से जब भी थोड़ी-सी आहार-विहार-आचार में भूल भी हुई है तो उन्होंने स्वयं को दण्ड दिया है। भूलों को दोहराना भी भटकना है। बड़ा कठिन मार्ग है, विरले ही चल पाते हैं। फिर भी घबराएं नहीं। सत्य के जिज्ञासु बनें, सत्यमानी, सत्यकारी, सत्यवान व श्रद्धालु बनें, अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषि के आदर्श हमारे मार्गदर्शक हैं।

श्री चन्द्रशेखर आजाद—जिनके सिंह पराक्रम से ही कांपती थी अंग्रेज सरकार

❑ प्रियवीर हेमाइना मो० 07503070674

वसुमति वसुन्धरा धरतीमाता आदि काल से ही अनेक नररत्नों को अपने गर्भ में रखती चली आयी है, इसीलिए इसी बारे में संस्कृत साहित्य में लिखा है—

दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा॥

दान में, तपस्या में, शौर्य में, विज्ञान में, विनम्रता में और नीति में आश्चर्य नहीं करना चाहिए क्योंकि यह वसुन्धरा एक नहीं, अनेक-अनेक रत्नों वाली है।

सन् 1921 के ये वे ही दिन थे जब पूरे ही देश में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध एक लहर-सी दौड़ रही थी। देश की तरुणाई भी लुटेरे जालिम अंग्रेजों को सात समुद्र पार खदेड़कर स्वाधीन होने के लिए मचल रही थी।

बनारस के गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज पर भी कुछ देशभक्त युवक जब धरना दे रहे थे, उनको गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हीं में से एक छोटे से बालक को नारे लगाते देख, पुलिस वालों का खून खौल उठा। एक पुलिस वाले ने तो तमाचा मारते हुए उसे हथकड़ी भी पहना दी। पुलिस उसे घसीटती हुई कोर्ट ले गई। आखिर उसे कोर्ट में अंग्रेज जज के सामने पेश किया गया और मात्र 'भारत माता की जय' बोलने के अपराध में जज ने उसे कोड़ों की भयंकर सजा दी।

कोड़े खाकर उसी समय अहिंसा का वह वीर पुजारी आग का गोला बनकर धधक उठा। उसने वहीं भरी अदालत में यह प्रतिज्ञा भी की कि तब तक ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दूंगा तब तक कभी चैन से नहीं बैठूंगा।

तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारे पिता का नाम क्या है? तुम्हारा निवास स्थान कहाँ है? ये तीन प्रश्न भी उसी चौदह वर्षीय बालक से बड़े ही रोबीले स्वर में जब मजिस्ट्रेट ने पूछे तो उसने उत्तर में जो कहा वह यही कहा—"अदालत सुनें और कान खोलकर सुनें-मेरा नाम है—**'आजाद!' 'आजाद!!' 'आजाद!!!' मेरे पिताश्री का नाम है—'स्वाधीन!' 'स्वाधीन!!' 'स्वाधीन!!!' और मेरा निवासस्थान है—'जेलखाना!' या कहना चाहिए—कारागार! कारागार!! कारागार!!!**"

उस अल्पायु बालक के इन उत्तरों को ज्यों ही सुना अदालत ने दांतों तले अंगुली ही दबा ली, फिर वह धधक भी उठी और जल-जलकर भस्म ही होने को थी कि उसने आज्ञा दी—इस दीवाने को पन्द्रह बेतें और लगाई जायें। पर इससे भी वह यज्ञोपवीतधारी देशभक्त दीवाना भला कहाँ डरने वाला था? उसी समय देखते ही देखते कोमल शरीर पर तड़ातड़ बेंत पड़ने लगे, पर उस बालक के मुंह से आह तक भी न निकली। वह वीर-धीर बालक तो प्रत्येक बेंत के आघात पर बस यही उद्घोष करता रहा—"वन्दे मातरम्!, भारत माता की जय! भारत माता की जय!!" उस वीर-धीर बालक का नाम था—**'चन्द्रशेखर'**। इसी लोमहर्षक अति भयंकर घटना के बाद तो बालक का वही नाम जो उसने अदालत को बताया था, उपनाम उसका बना और कालान्तर में यही 'आजाद' उपनाम सुनाम बनकर सदा-सदा के लिए अमर हो गया। उन 15 बेंतों के प्रत्येक ही आघात ने चन्द्रशेखर के बालहृदय को अंग्रेजों के प्रति घृणा से ही भर दिया था। बालक चन्द्रशेखर विदेशी अत्याचारी अंग्रेजों के साम्राज्य को देश से उखाड़ फैंकने के लिए संकल्पना ही कर बैठा था। दिन-रात वह यही सोचा करता था कि कैसे इन अंग्रेजों को यहां से खदेड़ा जाये?

फरार होकर आजाद उस बम पार्टी में सम्मिलित हो गये जो देश को स्वतन्त्र कराने के लिए भारत में उस समय अच्छी तरह से काम कर रही थी, जो देश से अंग्रेजी शासन को सशस्त्र क्रान्ति के बल पर उखाड़ फैंकना चाहती थी। रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाक उल्ला खां, सचीन्द्रनाथ सान्याल जैसे नौजवान इसी दल के ही सदस्य थे जो सिर से कफन बांधकर अंग्रेजी सरकार को निकालने के लिए प्रयत्न कर रहे थे। यह दल वही दल था जो बमों, पिस्तौलों और बंदूकों से पराधीनता के जुए को उतार फैंकना चाहता था। सशस्त्र क्रान्ति के आयोजन के लिए दल को भारी मात्रा में धन की आवश्यकता थी ही। उस समय के पूंजीपति जितने भी थे, वे सब ही हृदय से अंग्रेजों के ही भक्त थे, इसलिए क्रान्तिकारियों को उनसे धन की सहायता

मिल ही नहीं पा रही थी। अन्ततः लाचार होकर क्रान्तिकारियों को डाका डालकर धन प्राप्त करने का मार्ग ही अपनाना पड़ा। क्रान्तिकारियों ने शाहजहाँपुर के पास काकोरी रेलवे स्टेशन के निकट ट्रेन रोक कर सरकारी खजाने को ज्यों ही लूटा, अंग्रेजी सरकार दहल गई—भय से कांप उठी।

अंग्रेजी सरकार ने इस ऐतिहासिक ट्रेन डकैती कांड के प्रायः सभी अभियुक्तों को गिरफ्तार भी कर लिया था, किन्तु चन्द्रशेखर आजाद हाथ ही न आ सके थें, क्योंकि उनकी तो प्रतिज्ञा ही यह थी कि—''फिरंगी मुझे जिन्दा न पकड़ सकेंगे।''

सन् 1929 में वायसराय की गाड़ी पर बम फेंकने की योजना में भी आजाद की भूमिका प्रधान रूप में थी। इतना ही नहीं, असेम्बली भवन में बम फेंकने की योजना भी आजाद द्वारा ही रची गई थी। भगत सिंह और सुखदेव को जेल से छुड़ाने की योजना भी आजाद ने रची परन्तु देश का दुर्भाग्य या अंग्रेजों का सौभाग्य कहिए असमय में ही वह योजना असफल हो गई। इसके बाद तो फिर जो होना था वही हुआ ही। जब दीपक ही घर को फूंकने लगे कैसे किस्मत फूट न जाये। दल केही कुछ कायरों के कारण रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला जैसों को फांसी पर चढ़ना पड़ा। देश के वे दीवाने हंसते-हंसते ही फांसी के झूलों पर झूल गये। बिस्मिल और अशफाक के बाद सुखदेव, भगतसिंह और राजगुरु भी 23 मार्च, 1931 को फांसी पर चढ़ गये। सतलुज की लहरों में आज भी उनकी चिता की राख गरम है। और भविष्य में भी वह राख कभी ठंडी पड़ जायेगी, यह भला कैसे संभव है। स्वतन्त्र भारत के आकाश में इन शहीदों के रक्त की ही लाली है। 7 अक्तूबर 1930 को जिस दिन भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी की सजा सुनाई गई, उस दिन आजाद बहुत ही क्षुब्ध हो उठे थे।

आजाद सन् 1930 के अंत में कानपुर को छोड़कर इलाहाबाद चले गये। इलाहाबाद में ही एक दिन सुबह जब पण्डित जवाहर लाल नेहरू आनन्द भवन के अपने कमरे में लेटे हुए थे, सहसा ही उनके कक्ष का द्वार खुला। जवाहर लाल ने देखा कि एक हृष्ट-पुष्ट तेजस्वी नौजवान सामने खड़ा है।

उस युवक ने गम्भीरता से कहा—''मेरा नाम चन्द्रशेखर आजाद है, मैंने आज तक जो कुछ भी किया है वह देश की आजादी के लिए ही किया है। मैंने उनका ही खून बहाया है जो भारत की स्वतन्त्रता के शत्रु थे। इस समय मैं पुलिस से चारों ओर से घिरा हुआ हूँ, पुलिस मेरे पीछे बुरी तरह से हाथ धोकर पड़ी हुई है, आप बताएँ कि मैं क्या करूँ?''

जवाहर लाल युवक का मुँह देखते ही रहे, वे उसे कुछ उत्तर ही न दे सके। आजाद पाँच मिनट तक उत्तर की प्रतीक्षा भी करते रहे परन्तु जब कोई उत्तर ही न मिला, दरवाजे से बाहर निकल आये और उसके दो घण्टे बाद ही जवाहर लाल ने सुना कि चन्द्रशेखर आजाद अब इस दुनिया में नहीं हैं। अल्फ्रेड पार्क में वे पुलिस की गोलियों का मुकाबला करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये।

हाय, हा हन्त! 27 फरवरी, सन् 1931 का वह दुर्भाग्यपूर्ण दिन। जब दस बजे प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क में माँ भारतीय का वह सपूत वीर आजाद पुलिस से चारों ही तरफ से घिर गया। आजाद रामनाम का तहमद बांधे नंगे बदन थे ही और उनकी कटि में पिस्तौल भी बंधा हुआ था ही। जब असंख्य अनगिनत पुलिस उनके सामने बन्दूक और पिस्तौल तानकर गोलियाँ चलाने लगीं तो आजाद ने भी अपनी कमर से पिस्तौल निकाला और एक पेड़ की आड़ लेकर गोलियों के जवाब में गोलियां चलाने लगे। उनके माउजर पिस्तौल में केवल बारह गोलियां ही उस समय थीं, पर उनकी एक-एक गोली का निशाना इतना सही था कि यदि पुलिस पेड़ों की आड़ में न होती तो आजाद की बारह गोलियों से सैकड़ों की पंक्ति मौत के घाट वहाँ उतर जाती।

पर जब आजाद की पिस्तौल में केवल एक ही गोली रह गई तो उन्होंने कहा—आजाद आजाद है, वह अंग्रेजों की गोली से नहीं, अपनी ही गोली से मरेगा और फिर अपने मस्तक में अपनी ही गोली मारकर भारतमाता का वह सपूत चिरनिद्रा में सो गया।

आजाद भारत में सब कुछ है पर आज भी भारतमाता की आंखें गीली ही हैं। वह अल्फ्रेड पार्क के फूलों में आज भी अपने आजाद को ढूंढ़ रही है। न जाने कब माँ भारतीय का वह वीर सपूत चिरनिद्रा से जागेगा?

आजाद देश में आजाद जैसे शहीदों के ईंट और पत्थरों के ताजमहल चाहे न हों पर इतिहास का यह अमर शहीद, जिसके नाम से ही तत्कालीन सरकार कांपती थी, अपने

भोला था। इसलिए शिवशंकर भोले जी को भोला कहने लगे। शिवशंकर भोले को चिलम द्वारा सुल्फा (तम्बाकू) भांग पीते हुए का फोटो बनाना यह शिवशंकर भोले का घोर अपमान है। भांग पीने वाले कहते हैं कि भाग भोले की घूटी है। आप सभी से अनुरोध है कि शिवशंकर भोले जी का इतिहास पढ़कर देखो, शिवशंकर भोले जी के इतिहिास के बारे में स्वामी आनन्द जी की लिखी त्यागमयी देवियां नामक पुस्तक पढ़कर देखो। यह पुस्तक रेलवे रोड पर नाथ पुस्तक भण्डार रोहतक से मिलेगी।

—बलराज सिंह आर्य, गांव-सांघी, जिला रोहतक

योग-ध्यान-साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्य स्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य माँ सत्यप्रियायति जी के सान्निध्य में दिनांक 10 से 17 सितम्बर 2017 तक निःशुल्क योगसाधना शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराये जायेंगे तथा योगदर्शन एवं उपनिषद् पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में ऋषि उद्यान, अजमेर से आचार्या सुकामा जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी, स्वामी नित्यानन्द जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भांति सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य स्वामी जी के सान्निध्य में पहले लगाये गये शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं० 09419107788, 09419796949 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

—भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

पेंटिंग प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल ने पेंटिंग प्रतियोगिता में एक बार फिर जलवा दिखाया। जी.डी. गोयनका (G.D. Goenka School) स्कूल में 28 जुलाई 2017 को आयोजित Inter-School Painting Competition था जिसमें पानीपत के लगभग सभी स्कूल आए थे। आर्य बाल भारती स्कूल सभी स्कूलों को पीछे छोड़ता हुआ प्रथम और चौथे स्थान पर रहा। आर्य बाल भारती स्कूल की छात्रा सुनयना ने पेंटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहां से इन छात्राओं को प्रमाण-पत्र और अति सुन्दर शील्ड देकर सम्मानित किया गया जो कि आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत के लिए गर्व की बात है। अगले दिन सुबह सभा में आर्य बाल भारती स्कूल की प्रधानाचार्या ने इन बच्चों की जी भरकर सराहना की जिससे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ा। इस जीत का श्रेय बच्चों के अलावा इनकी ड्राइंग अध्यापिका एवं प्रधानाचार्या को जाता है।

एक मन घी का वृष्टियज्ञ सम्पन्न

14,15,16 जुलाई 2017 को सलारपुर सोनीपत में वृष्टियज्ञ का आयोजन हुआ। आर्यजगत् के प्रख्यात संस्कार मर्मज्ञ आचार्य श्री वेदमित्र जी देवऋषि विद्यापीठ नंदगढ़ जींद यज्ञ ब्रह्मा थे। श्री धर्मपाल मलिक जी प्रतिवर्ष इसका आयोजन करते हैं। पूर्णाहुति पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वेदप्रचार रथ श्री रमेश आर्य जी के नेतृत्व में अंजलि आर्या की सुन्दर प्रस्तुति ने कार्यक्रम शोभायमान कर दिया। श्री ओमप्रकाश शास्त्री, श्री हेडमास्टर विद्यालय, श्री केहरसिंह सिंहमा व ब्र० श्री दयानन्द ठरू व अनेक आर्यों का सहयोग रहा। यजमान दम्पति व युवाओं ने भी हिस्सा लिया।

भजन : परमपिता के ध्यान में...

आनन्द के लूटै खजाने, भई परमपिता के ध्यान में।
प्रकृति में बैठ करके, अन्तरयात्रा जब हम करते हैं।
परमेश्वर से बातें करके, मन को हर्षित करते हैं।
आनन्द के लूटै खजाने.... ॥ 1 ॥
न्यारे-न्यारे फूल और पौधे, पक्षियों की चहचहाहट है।
ऊँचे-नीचे नदी-नाले, समुद्र की गड़गड़ाहट है।
आनन्द के लूटै खजाने.... ॥ 2 ॥
चिन्तन और मनन करके, ओ३म् नाम जो रटता है।
साक्षात् दर्शन हो पिता के, मन से भय फिर भगता है।
आनन्द के लूटै खजाने.... ॥ 3 ॥
परमपिता है दयानिधि, सब पर दया करता है।
दयानिधि की करे उपासना वही पार उतरता है।
आनन्द के लूटै खजाने.... ॥ 4 ॥
नित्य उपासना करता है, जो उसका ज्ञान बढ़ता है।
चिन्ता से रहित होकर सदा उपलब्धि पाता है।
आनन्द के लूटै खजाने.... ॥ 5 ॥
वेदमार्ग पर चलो सुमित्रा, ऋषियों ने बतलाया है।
समर्पण होकर करो साधना, अभी न कुछ खोया है।
आनन्द के लूटै खजाने.... ॥ 6 ॥

-सुमित्रा देवी आर्या, आर्यनगर, झज्जर 9541247368

समाचार-प्रभाग

महात्मा कन्हैयालाल महता जी का जन्मदिवस 'विद्यार्थी अवार्ड दिवस' के रूप में सम्पन्न हुआ

दिनांक 15 जुलाई, 2017 को महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान एवं आर्यसमाज, नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद ने अपने संस्थापक अध्यक्ष महात्मा कन्हैयालाल महता जी का जन्मदिवस हर्षोल्लास के साथ **'विद्यार्थी अवार्ड दिवस'** के रूप में सम्पन्न किया। इस अवसर पर के.एल. महता दयानन्द पब्लिक विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अपने आदर्श-प्रेरक महता जी के प्रति अपनी श्रद्धाभाव रूपी शब्दों में पिरोकर अनेक गीत गाए। समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती सीमा त्रिखा, मुख्य संसदीय सचिव हरियाणा सरकार तथा विशिष्ट अतिथि श्रीमती सुमन बाला महापौर फरीदाबाद ने उपस्थित होकर समारोह की गरिमा बढ़ाई। श्रीमती सीमा त्रिखा ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि उन्हें हमेशा बेहद गर्व की अनुभूति होती है जब प्रदेश के दूसरे शहरों ने फरीदाबाद का परिचय लोग **'महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान'** के रूप में देते हैं। वैदिक संस्कृति और आधुनिक शिक्षा का यह संस्थान पर्याय रहा है।

इस अवसर पर के.एल. महता दयानन्द विद्यालयों में सीबीएसई तथा हरियाणा बोर्ड में सर्वोच्च अंक पाने वाले विद्यार्थियों को स्वर्णपदक प्रदान किए गए। इस वर्ष सीबीएसई में XII की छात्रा सुश्री वर्षा अग्रवाल ने (के.एल. महता दयानन्द सी.से. स्कूल, सेक्टर-16) 94% अंक प्राप्त कर स्वर्णपदक लिया। हरियाणा बोर्ड की X की परीक्षा में मास्टर अविनाश IE64 विद्यालय के छात्र) ने 91% अंक प्राप्त कर स्वर्णपदक लिया। आर्य वीरांगना कु० प्रिया भड़ाना तथा कॉलेज की छात्रा नेहा कुमारी को भी आर्यवीर स्वर्णपदक दिया गया। संस्थान की अध्यक्षा डॉ० (श्रीमती) विमल महता ने सभी अतिथिजन के प्रति आभार व्यक्त किया। अनेक गणमान्य अतिथि इस समारोह में शामिल हुए।

ईशाक में सात दिवसीय आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न

कुरुक्षेत्र, 3 अगस्त 2017: गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत व गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सैनी के ओजस्वी मार्गदर्शन में चल रहे वेद प्रचार अभियान के तहत राजकीय उच्च विद्यालय, ईशाक में सात दिवसीय आर्यवीर दल योग एवं जीवन निर्माण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें गुरुकुल के योग प्रशिक्षक सचिन आर्य एवं भीष्मपाल आर्य द्वारा विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया गया। आज इस शिविर का भव्य समापन हुआ जिसमें गुरुकुल के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता यशवीर आर्य, भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य व जगदीश आर्य मुख्य रूप से उपस्थित रहे। विद्यालय में पहुंचने पर वेद प्रचार विभाग की टीम का प्रिंसीपल वीरेन्द्र जी सहित सभी शिक्षकों ने फूल-मालाओं से स्वागत किया। इसके उपरान्त विद्यार्थियों द्वारा शिविर में सीखे गये सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, डम्बल, लेजियम, स्तूप निर्माण, योगासन आदि का हैरतअंगेज प्रदर्शन किया गया जिसे देख कार्यक्रम में उपस्थित बच्चों के परिजनों के तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा विद्यालय परिसर गूंजा दिया। महाशय जयपाल आर्य ने देशभक्ति गीतों के माध्यम से बच्चों को राष्ट्रप्रेम और वीरों के गौरवशाली इतिहास से परिचित कराया। गुरुकुल के प्रचारकों द्वारा विरेन्द्र को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। प्राचार्य ने अपने वक्तव्य में गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा चलाये जा रहे वेद प्रचार अभियान की सराहना की और भविष्य में भी गुरुकुल को पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। वेद प्रचार अधिष्ठाता यशवीर आर्य ने अपने सम्बोधन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के समाज सुधार के क्षेत्र में किये जा रहे नशामुक्ति अभियान, पाखण्ड खण्डन, जैविक कृषि तथा आपसी भाईचारे को बढ़ावा देना आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की और बच्चों को आर्य समाज के सिद्धान्तों और वैदिक सभ्यता व संस्कृति का अनुसरण करने का आह्वान किया।

भोले जी को योगी से भोगी बना दिया

हर कोई कहता है कि शिवशंकर भोला भांग रगड़कर पीया करता, शिवशंकर भोला कुण्डी सोटे वाला था। माता पार्वती शिवशंकर को भांग रगड़कर पिलाया करती। शिवशंकर भोले ने भांग पीना तो दूर भांग के पेड़ (पौधे) को कभी हाथ भी नहीं लगाया। शिवशंकर भोला भांग पीने वाला नहीं योगी था। दो-चार कलाकारों ने शिवशंकर भोले को योगी से भोगी बना दिया। शिवशंकर भोले योगी को नचा-नचाकर मदारी बना दिया। शिवशंकर भोले को नचा-नचाकर योगी से रंगीला बना दिया। शिवशंकर भोले जी पर अभद्र गाने, कहानी नाटक बनाये जाते हैं। शिवशंकर भोले को भोला क्यों कहा जाता है ? जिस हस्ती ने शिवशंकर भोले के नाम से तपस्या करी, शिवशंकर भोले जी ने उसी को ही वरदान दे दिया। चाहे शिव शंकर भोले जी का विरोधी भी क्यों न हो, शिवजी ने उसको भी वरदार दे दिया। शिवशंकर भोले जी योगी था, तपस्वी था, त्यागी था, लेकिन शिव शंकर जी स्वभाव से सदा

वीरतापूर्ण कार्यों से युग-युग में अमर रहेगा ही। '**कीर्तियस्य सः जीवति**' जिसका यश अमर है वह सदा जीवित रहता है। वीर ही नहीं, विप्रवीर आजाद इसलिए थी सदा जीवित रहेंगे क्योंकि उन्होंने अपने पराक्रमी अनुभव जीवन से अथर्ववेद के इस मंत्र को भी व्यावहारिकता के धरातल पर पूर्णरूप से सार्थक कर दिखाया—**अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्। अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशाशामाशां विषासहिः॥** (अथर्व० 12.1.54) राष्ट्रभूमि पर मैं साहसी हूँ, भूमि पर मैं उत्कृष्ट भी हूँ। दुश्मन से मुकाबला पड़ने पर उसके छक्के छुडा देने वाला भी हूँ। मुझ में सब ही शत्रुओं को परास्त कर डालने की असीम शक्ति है—प्रत्येक दिशा में।

अन्त में आकर यहीं यह भी तो सोचने का विषय है कि जैसी वीरता इस वेदमंत्र में वर्णित है, वैसी ही वीरता उस आजाद के व्यक्तित्व में थी। पर थी भी क्यों? उनमें ऐसी ही वीरता इसलिए थी क्योंकि वे भारत की उसी बलिदानी, मिट्टी में तो उत्पन्न हुए थे जिसने विदेशी विधर्मी मुगल साम्राज्य से लोहा लेने वाले राणाप्रताप शिवाजी, वन्दा वैरागी और गुरु गोविन्द सिंह जैसे वीरों को उत्पन्न किया था। भारत की मिट्टी का कण-कण ऐसे ही वीरों के चरणों की पावन रज से आज भी अपने आपको केवल पावन पुनीत ही नहीं अपितु धन्य भी मानता है। श्री चन्द्रशेखर आजाद भी ऐसे ही वीरों की श्रेणी में आने वाले अनुपम ओजस्वी वीर थे। भारत की वीर परम्परा में वे एक नया ही अध्याय लिखकर गये जो स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में मजबूती से जुड़ा हुआ है। इतना ही नहीं, आजाद ने अपने चमकते हुए खून से जो वीरता का नया अध्याय स्वाधीनता संघर्ष में लिखा देश उस पर सदा ही अभिमान करेगा। नमन, बहुसंख्य नमन उस वीरात्मा आजाद को! जो जीते जी फिरंगियों के हाथ न आया। नमन उस वीर माता जगरानी देवी को भी जिसने चन्द्रशेखर आजाद जैसी वीर संतान उत्पन्न करके राष्ट्र को समर्पित की। वह परलोकवासी माता आज भी अपने चन्द्रशेखर की वीरता को याद करके अवश्य कहीं प्रसन्न हो रही होगी, क्योंकि—**सुतविक्रमे सति न नन्दति का खलु वीरसूः॥** (कुमार० 12.59) वीर सन्तान उत्पन्न करने वाली माता अपने बेटे की बहादुरी देखकर प्रसन्न होती ही है।

संपर्क-318, विपिन गार्डन, नई दिल्ली-110059

मनुष्य अपने भाग्य का.... पृष्ठ 7 का शेष....

दान भजन सत्संग करे, है जीवन का सार।
जीवन उत्तम है वही, जिसमें है उपकार॥
यह है सत्य संसार में, जीवन है दिन चार।
पापकर्म फिर क्यों करें, अब लें सोच-विचार॥
नेकी बदी दो गाड़ियां, रहती सदा तैयार।
मूर्ख चढ़ते बदी पर, नेकी पर होशियार॥

अज्ञान मानव का परम शत्रु है। अज्ञान से उत्पन्न आत्मविश्वास मनुष्य को सत्यपथ से हटाकर असत्य पथ पर ले जाता है। इसका परिणाम सर्वदा दुःख ही है। आजकल के भ्रष्ट व्यक्तियों को इससे शिक्षा लेनी चाहिए।

लोभ सब पापों की जड़ है। लोभी आदमी भयंकर से भयंकर अपराध कर बैठता है। लोभ का त्याग करो। वे लोग अति दुःखी हैं, जो अविद्या की उपासना करते हैं, परन्तु उससे भी कहीं बढ़कर दुःखी वे हैं, जो विद्या पर गर्व करते हैं। ''मनुष्यों का आचरण दो प्रकार का होता है। एक सत्य तथा दूसरा झूठ का अर्थात् जो पुरुष वाणी, मन और शरीर से सत्य काआचरण करते हैं, वे देवता कहाते और झूठ का आचरण वाले हैं वे असुर राक्षस आदि नामों के अधिकारी होते हैं'' (शतपथ-ब्राह्मण)।

श्रेष्ठकर्म करते हुए जीने की इच्छा भारतीय जीवन दर्शन है। वेद का भी उपदेश है कि हे मनुष्यो! पुरुषार्थी और कर्मशील बनो। कर्मों से मनुष्य देवता बनता है, कर्मों से ही मनुष्य राक्षस बनता है। यह संसार कर्म की खेती है। जो जैसा बोता है, वह वैसा पाता है।

जैसा बीज वैसा फल। जैसी करनी वैसी भरनी।
करनी करे सो फल भरे, करके क्यों पछताय।
बोये पेड़ बबूल के, तो आम महाँ से खाय॥

जीव कर्म करने में स्वतन्त्र, परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। जीव अपने कर्मानुसार जगत् में आता है और उसी के अनुसार फल भोगकर चला जाता है। अकेला आता और अकेला ही चला जाता है। जो इंसान कर्म करता है, उसी के आधार पर जाति, आयु और भोग प्राप्त होते हैं।

जब तक तुम जीते हो सदा सत्य कर्म में ही पुरुषार्थ करते रहो, किन्तु इसमें आलस्य कभी न करो, ईश्वर का यह उपदेश सब मनुष्यों के लिये है।

—सूबेदार करतारसिंह आर्य 'सेवक'
आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

वेद प्रचार कार्यक्रम कासनी में मुख्यातिथि मा. रामपाल आर्य।

वेद प्रचार कार्यक्रम कासनी में मुख्यवक्ता आचार्य सर्वमित्र आर्य।

वेद प्रचार कार्यक्रम कासनी में यज्ञ करवाते हुए आचार्य अभयआर्य।

आर्य समाज जीन्द में श्रावणी उत्सव में मुख्यातिथि आचार्य सर्वमित्र आर्य।

सरल आध्यात्मिक शिविर

1 नवम्बर से 5 नवम्बर 2017

शिविराध्यक्ष ➡ **स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक**
(निदेशक, दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, गुजरात/सुन्दरपुर रोहतक)

अन्य विद्वान् ➡
स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक (दर्शन योग महाविद्यालय सुन्दरपुर, रोहतक)
आचार्य देवप्रकाश (आचार्य व्याकरण, निरुक्त व दर्शन)
श्रीमती कमलेश राणा योगाचार्या (योग शिक्षिका)

स्थान - दयानन्द मठ, रोहतक

आयोजक ➡ **वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास (पंजी)**
रोहतक (हरियाणा)

सम्पर्क सूत्र
09416139382
09466258105
09355674547

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक

श्री ....
पता ....
....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा